Criticism and Contribution of the Behaviouralism
(व्यवहारवादी दृष्टिकोण एवं अति व्यवहारवादी दृष्टिकोण के अन्त)

- व्यवहारवाद की सबसे बड़ी कमजोरी उसकी मूल्य निरपेक्षता है। वह एक ऐसी मूल्यविहीन विज्ञान की स्थापना करना चाहता है, जो नैतिक निर्णयों के महत्व से इन्कार कर राजनीतिक घटनाओं का इस प्रकार विश्लेषण करता है मानो वह प्रकृति के यांत्रिक क्रियाओं का अंग हो। परन्तु इस तरह की धारणा गलत है। यदि मूल्य निरपेक्षता ही वैज्ञानिकता है तो फिर प्रजातन्त्र और तानाशाही समान हो जाती है। स्ट्रॉस के अनुसार, "व्यवहारवादी अच्छाई के ज्ञान का तिरस्कार करता है और जीवन के प्रति अन्धवादी दृष्टिकोण को प्रोत्साहित करता है।

→ व्यवहारवादियों के पास संगतता से सम्बंधित मान्यताओं का अभाव है।

- राजनीति, ज्ञान के मिथ्या सिद्धान्त पर आधारित है, जो केवल तथ्यों को ही वास्तविक मानता है। अर्थात विश्वव्यापी मान्यताओं के सम्बन्ध में ही ऐसा हो सकता है।

- व्यवहारवाद यह परिभाषा देकर विज्ञान के विस्तार को सीमित कर देता है कि हमें राजनीतिक जीवन के तथ्यों का ही अध्ययन करना चाहिए।

- राजनीति विज्ञान के तत्व प्राकृतिक सिद्धान्त पर आधारित है।

- व्यवहारवादियों ने अपने आप को तत्कालीन एवं

गम्भीर समस्याओं से अलग करके बुद्धिजीवी वर्ग को शामिल कर लिया है। अल्फ्रेड कोबान ने कहा है कि "व्यवहारवाद राजनीति के खतरनाक खतरा से बचने के लिए विश्वविद्यालय के शिक्षकों द्वारा अविष्कृत युक्ति है।"

- व्यवहारवादी विश्लेषण अपूर्ण विश्लेषण पद्धति है, जो क्या है? का अध्ययन करता है, क्या होना चाहिए? को नहीं।

<u>योगदान</u> — आलोचनाओं एवं सीमाओं के बाद भी व्यवहारवाद राजनीति विज्ञान में महत्वपूर्ण स्थान रखता है और इसने महत्वपूर्ण परिवर्तन लाया है। व्यवहारवाद के महत्व एवं प्रभाव को निम्नलिखित बिन्दुओं द्वारा स्पष्ट किया जा सकता है —

→ व्यवहारवादी क्रान्ति ने राजनीतिशास्त्रियों के दृष्टिकोण को व्यापक बनाया है तथा उन्हें अन्तर-अनुशासनात्मक दृष्टिकोण प्रदान किया है।

→ व्यवहारवाद ने राजनीति विज्ञान को स्वतंत्रता तथा आधुनिकता प्रदान की है। व्यवहारवादियों ने स्पष्ट कहा है कि उनका सम्बन्ध 'क्या है?' से है न कि 'क्या होना चाहिए' से राजनीतिक अनुसंधान में तथ्यों को जानना अधिक महत्वपूर्ण है।

→ व्यवहारवाद ने राजनीति विज्ञान के लक्ष्य, स्वरूप, विषय-क्षेत्र, पद्धति विज्ञान आदि सभी को

बदल दिया है। इसके प्रभाव से यह न केवल राज्य-विज्ञान बन गया है, बल्कि अब राजनीति विज्ञान का अध्ययन संस्थाओं की संरचनाओं के बदले प्रक्रिया को समझने पर अधिक ध्यान केन्द्रित करने लगा है।

इस प्रकार आधुनिक राजनीति विज्ञान के निर्माण में व्यवहारवाद की भूमिका काफी महत्वपूर्ण है। उसने राजनीति विज्ञान को उसकी निद्रा से जगाया है, उसने शोध के लिए नए आयामों को खोला तथा नई तकनीकों का विकास किया। इसी कारण रॉबर्ट डहल ने कहा है, "व्यवहारवाद अनुशासन के मुख्य निकाय में आत्मसात हो चुका है या हो जाएगा।"

व्यवहारवाद एवं उत्तर व्यवहारवाद में अन्तर

व्यवहारवाद दृष्टिकोण	उत्तर व्यवहारवाद दृष्टिकोण
→ इसका मुख्य सरोकार शुद्ध ज्ञान या सिद्धान्त से है।	→ इसमें अनुप्रयुक्त ज्ञान या व्यवहार पर विशेष ध्यान दिया जाता है।
→ इसमें ज्ञान को अपने-आपमें साध्य समझा जाता है। अतः यह 'ज्ञान के लिए ज्ञान' में विश्वास करता है।	→ इसमें सामाजिक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए ज्ञान की प्रासंगिकता पर विचार किया जाता है, और समस्या समाधान के उद्देश्य से कार्यवाई (Action) की मांग की जाती है।

व्यवहारवादी दृष्टिकोण

→ इसमें निर्णयन की प्रक्रिया का विश्लेषण किया जाता है

→ इसमें व्यक्ति विश्लेषण अर्थात् छोटी इकाईयों के विश्लेषण पर ध्यान दिया जाता है

→ यह मूल्य निरपेक्ष है

→ यह यथास्थिति का द्योतक है

उत्तर व्यवहारवादी दृष्टिकोण

→ इसमें निर्णय के कथ्य या वस्तु-तत्व का विश्लेषण किया जाता है।

→ इसमें समष्टि विश्लेषण अर्थात् बड़ी-बड़ी इकाईयों की स्थिति पर और भूमिका के विश्लेषण पर ध्यान दिया जाता है।

→ यह मूल्यों से भी सरोकार रखता है।

→ यह सामाजिक समस्याओं के प्रति अत्यन्त सजग है तथा सामाजिक परिवर्तन की माँग करता है।